वाचन कौशल (Speaking Skill)

"वाचन एक जटिल सीखने की प्रक्रिया है, जिसमें सुनने के गतिवाही माध्यमों का मानसिक पक्षों से सम्बन्ध होता है"

[कैथरीन ओकानर के अनुसार]

"किसी कविता, पाठ या पुस्तक के किसी भाग को सस्वर अथवा मौन रूप से पढ़ना वाचन कहलाता है, यानि किसी भाषा में लिखित सामग्री को पढ़ना और उसका अर्थ समझना ही वाचन है। वाचन एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसमें संकेतों का प्रसंस्करण करते हुए उनसे अर्थग्रहण किया जाता है।

"वाचन एक साधन है जिसके माध्यम से बालक सम्पूर्ण मानवता के द्वारा संचित ज्ञान राशी से परिचित हो सकता है"

[लयूइस ने 'स्कूल में भाषा' नामक पुस्तक में लिखा है।]

वाचन प्रक्रिया के सोपान

① **प्रत्यक्षीकरण** – इसमें शिक्षक चित्रादि की सहायता से या श्यामपट्ट पर वर्णों को लिखकर तथा बार-2 वर्णों से छात्रों को प्रत्यक्ष कराकर वाणी द्वारा उनके अभ्यास से वर्णों का ज्ञान देता है।

- बार-2 देखने सुनने व बोलने से वर्णों के चित्र बालक के मस्तिष्क पर अंकित हो जाते हैं।

i. ध्वनि के प्रतीक वर्णों को पहचानना।
ii. वर्णों को पहचान कर पढ़ना।
iii. वर्णों के योग से शब्द बनाना।
iv. शब्दों को उचित सोपानों में बाँटकर पढ़ना।

② **अर्थग्रहण** –

③ **प्रयोग** –

श्रवण कौशल का सोपान

1. ध्वनि का ध्यानपूर्वक पढ़ना
ii. अर्थ ग्रहण
iii. प्रयोग

वाचन के प्रकार

वाचन

1. **सस्वर वाचन**
- स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण
- वाचन की प्रारंभिक अवस्था

  - **व्यक्तिगत वाचन**
    - एक व्यक्ति द्वारा आवाज करते हुए
    - शिक्षक द्वारा किए गए अनुकरण वाचन
  - **सामूहिक वाचन**, समवेत
    - दो या दो से अधिक बालक
    - छोटी कक्षाओं के उपयोगी

2. **मौन वाचन**
- जब बच्चा पैदल चलना सीख जाता है तो वह घुटनों के बल चलना छोड़ देता है उसी प्रकार वाचन में कुशलता प्राप्त करने के बाद वह सस्वर वाचन छोड़ देता है।
- कक्षा 6 का छात्र सस्वर वाचन 1 मिनट में = 170 शब्द
- कक्षा 6 का छात्र मौन वाचन 1 मिनट में = 210 शब्द

  - **गहन अध्ययन**
    - गहनता व सूक्ष्मता के साथ अध्ययन
  - **द्रुत वाचन**
    - मौन रूप में तीव्र गति के साथ पढ़ने की
    - इसका उद्देश्य छात्रों में शीघ्र पढ़ने व समझने की आदत विकसित होता है।

पाचन के उद्देश्य तथा अपेक्षित गुण

NOTE, वाचन शिक्षण से भावों एवं विचारो का सम्प्रेषण किया जाता है।

---

① छात्रो को शब्द, ध्वनियों व उनके उच्चारण का उचित ज्ञान कराना जिससे वाचन में शब्दो का उच्चारण शुद्ध रूप में कर सकें।

② शब्दो के शुद्ध उच्चारण के साथ स्वर का उतार-चढ़ाव, पदबंध और वाक्य का शुद्ध रूप में प्रयुक्त करना भी अपेक्षित है।

[ध्यान रहे कि व्याकरणीय पदक्रम व्यवस्था का पालन आवश्यक है।]

③ प्राथमिक कक्षाओ में अक्सर छात्र वाचन अथवा बोलने में झिझकते हैं। अतः शिक्षक को अभ्यास तथा प्रोत्साहन करते हुए निःसंकोच बिना झिझके बोलने की प्रवृत्ति का विकास करना चाहिए।

④ लोकप्रचलित भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए, इसे व्यावहारिक भाषा की संज्ञा दी जाये, क्योंकि प्रचलित भाषा में छात्रो को बोधगम्य करना सरल होता है। [मुहावरे, सूक्तियें का समुचित प्रयोग भी होना चाहिए।]

⑤ भावो एवं विचारो अथवा पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण में सशक्त भाषा का प्रयोग होना चाहिए। भावो एवं विचारो के अनुरूप शब्दों का प्रयोग आवश्यक है। [ध्यान देने योग्य बातें शिक्षको के लिए – ओजस्वी वाणी से वाचन व कथन प्रभावपूर्ण हो जाता है।]

⑥ वाचन में कथन को प्रभावी बनाने के लिए – स्वराघात, अनुतान, ओजस्विता, स्वर, गति, ध्वनि उतार-चढ़ाव, प्रवाह, भाव-भंगिमा या मुख-मुद्रा कथन के स्थलो के अनुरूप होनी चाहिए।

⑦ प्रकरण एवं भाव के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया जाए। श्रोताओ के अनुसार समय तथा स्थल के अनुरूप ही वाचन किया जाए।

⑧ छात्रो के शिष्टाचार तथा आचरण सम्बन्धी शब्दो को लिखना तथा उनके अभ्यास को अवसर देना चाहिए। वाचन के समय उचित आसन से खड़ा होना चाहिए।

⑨ वाचन में मौलिकता, मर्मस्पर्शिता, मधुरता, और शीतलता का समावेश होना चाहिए।

⑩ हिन्दी भाषा ~~मैं~~ के वाचन में कृत्रिमता नहीं होनी चाहिए। स्वाभाविक एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

[वाचन में पाठ्यवस्तु, भाव तथा विचारो की सार्थकता निहित होती है।]

— " वाचन की शिक्षण विधियाँ सात है " —

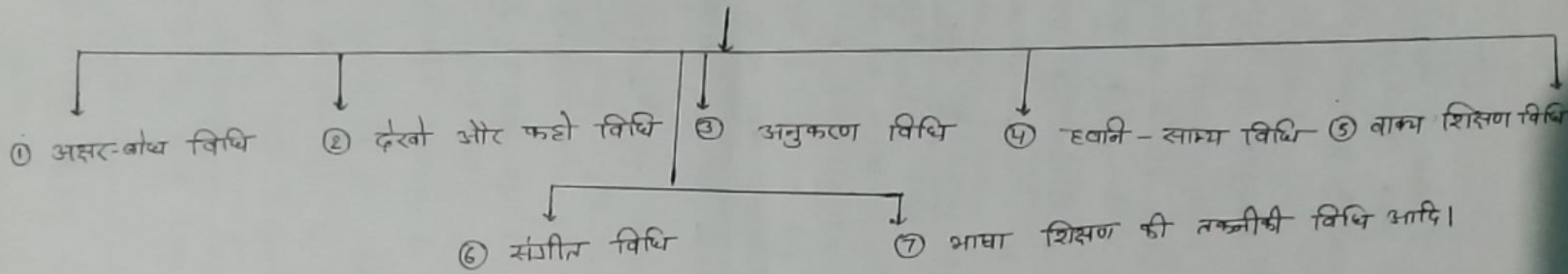

— मनोविज्ञान की दृष्टि से वाचन विधियाँ तीन है —

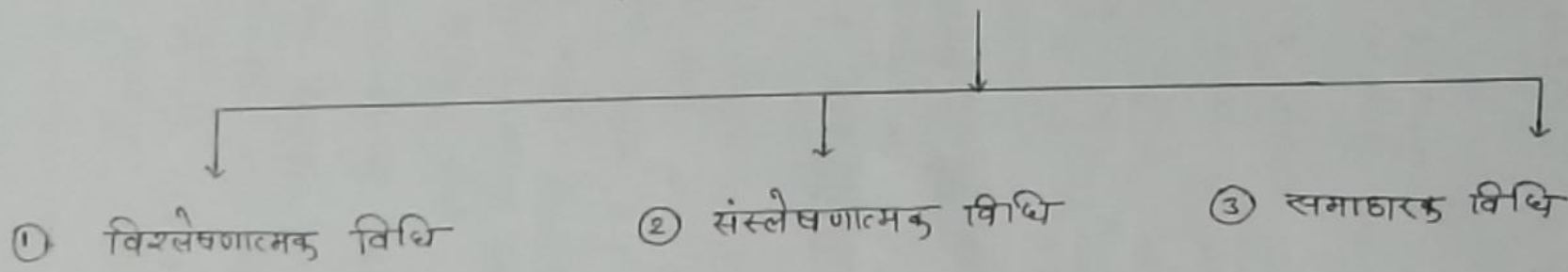

① अक्षर - बोध विधि [Alphabet Method] -

• यह सबसे प्राचीन शिक्षण विधि है। इसमें सर्वप्रथम स्वर तथा व्यंजन शब्दों को पढ़ाया जाता है।

• इस विधि में अक्षर की प्रधानता दी जाती है। स्वर शिक्षा में बालक को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाता है।

• पुनः इसके बाद बालक स्वर एवं व्यंजन का मिलान सीखता है। और इसी मिलान से बालकों को वाक्य रचना में सहायता करता है।

• और इसके पुनः बाद पूर्ण वाक्य की रचना करके बालक वाचन करने लगता है। अक्षरों का मिलान सिखाया जाता है, उसके बाद शब्दों को मिलाकर वाक्य बनाया जाता है।

• इस विधि से बालकों का उच्चारण शुद्ध होता है, अक्षर, शब्द तथा वाक्य का क्रमबद्ध ज्ञान होता है। अक्षरों में स्वरों व व्यंजनों को मिलाने से नये शब्दों की रचना होती है। इस विधि से व्याकरण तथा भाषा सम्बन्धी नियमों का बोध सरलता से होता है।

② देखो और कहो विधि [Look and Say Method] -

• इस विधि में अक्षरों के बोध के स्थान पर शब्द - बोध कराया जाता है। चित्र देखकर बालक को स्वयं ही उस शब्द का ध्यान आ जाता है। चित्र ऊपर अथवा नीचे बना रहता है। उसे देखो और कहो। बालक देखकर समझने का प्रयास करता है - फिर बोलता है।

• ध्यान रहें, चित्र बालक के "परिचय की परिधि" में हो इसीलिए बालकों के स्तर की वस्तुओं के चित्र तैयार किये जाते हैं उन्हीं का प्रयोग किया जाता है। चित्रों को श्यामपट्ट पर भी बनाया जा सकता है।

• NOTE इस विधि की विशेषता है - रोचकता, आकर्षण और मनोहरता। चित्रों के साथ शब्द चित्र बालकों के मानसिक पटल पर छा जाते हैं। इन शब्दों और चित्रों के आधार पर वर्णमाला का ज्ञान दे दिया जाता है।

③ अनुकरण विधि [Imitation Method] -

• इस विधि में अध्यापक एक-एक शब्द कहता जाता है, और बालक उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करते चलते हैं।

• हिन्दी भाषा के लिये इस विधि का कोई महत्व नहीं, हिन्दी में प्रत्येक अक्षर की ध्वनि निश्चित है, क्योंकि यहाँ पर एक अक्षर की एक ही ध्वनि होती है। जबकि अँग्रेजी अक्षर की ध्वनि निश्चित नहीं है। यहाँ पर एक अक्षर की एक से अधिक ध्वनियाँ होती हैं जहाँ पर लिखा लिखा कुछ जाता है और पढ़ा कुछ जाता है। जैसे एक ही अक्षर 'डी' का प्रयोग 'द' तथा 'ड' दोनों

ध्वनियों के लिए होता है।
• शिक्षक के आदर्श वाचन का अनुकरण जीवन पर्यन्त छात्रों के काम आता है। शिक्षक के उच्चारण के अनुकरण से ही बालक शुद्ध उच्चारण सीखते हैं। जिससे वाचन में शुद्धता आती है, और भावपूर्ण वाचन सीखता है।
NOTE "अनुकरण विधि के लिए शिक्षक के वाचन में भावपूर्णता और शुद्ध उच्चारण आना आवश्यक होता है।"

• अनुकरण विधि को प्रभावशाली बनाने के लिए "सामुहिक वाचन प्रविधि" बहुत ही प्रभावी है। जैसे- कविताएँ, गीत, कठिन शब्दों का उच्चारण
• सामुहिक वाचन में बालक स्वाभाविक रूप से शुद्ध उच्चारण कर लेता है।

④ ध्वनि साम्य विधि
• इस विधि के अन्तर्गत ध्वनि की समानता रखने वाले शब्दो को साथ-साथ सिखाया जाता है। एक-सी ध्वनि के कारण छात्र एक साथ सरलता से सीख लेते हैं। Ex- धर्म, मर्म, गर्म, शर्म, कर्म
निखद्दू, टद्दू, लद्दू
क्रम, भ्रम, भ्रम शब्दो में समान ध्वनि है।
• इस विधि में कभी-कभी आनावश्यक शब्द भी सीखने पड़ जाते हैं जैसे बालक घर में 'कर्म' के स्थान पर 'काम' तथा 'धर्म' के स्थान पर 'धरम' इसी प्रकार 'गर्म' को गरम भी कहने लगता है।
• इस विधि द्वारा उन शब्दो के विषय में भी कठिनाई होती है, जो बालक की अनुभव- परिधि से बाहर हो। जैसे बालक लद्दू का अर्थ तो जान लेता है, परन्तु टद्दू और निखद्दू को नही समझ पाता है।

⑤ वाक्य शिक्षण विधि
• "अक्षर बोध विधि में अक्षर की ध्वनि से", "देखो और कहो विधि में शब्दो से" शिक्षण आरम्भ करते हैं।
• वाक्य विधि में शब्दो से प्रारम्भ न करके वाक्यों से शिक्षण आरम्भ किया जाता है।
• इस विधि में शिक्षण क्रम अवरोही होता है। यानि वाक्य-शिक्षण विधि में अवरोही क्रम ⇒ वाक्य → से → शब्द → अक्षर का, बोध कराया जाता है।
• अक्षर- बोध में आरोही क्रम अक्षर होता है।
आरोही क्रम ⇒ अक्षर → से → शब्द → वाक्य का प्रयोग किया जाता है।
• लिखने से तथा पढ़ने के पूर्व ही बालक पूर्ण वाक्य बोलता और सुनता है। इसलिए शिक्षण वाक्य से करना मनोवैज्ञानिक प्रतीत होता है।

• आरम्भ में वाक्यों का स्वरूप दो शब्दों, फिर तीन शब्दो का होना चाहिए।

आरम्भिक स्तर – 'पानी लाओ', 'खाना दो', 'स्कूल जाओ'।

द्वितीय स्तर – 'मैंने पानी पिया', 'वह खाना लाया', 'मेरा घर है'।

तृतीय स्तर – 'मैंने पानी नहीं पिया', 'वह अपने घर गया'।

इस प्रकार वाक्यों का आकार धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए।

• बालक की दृष्टि पूर्ण वाक्य पर पड़ती है फिर शब्दो पर ध्यान जाता है। छोटे-छोटे वाक्यों से तथ्यो का ज्ञान भी सरलता से दिया जा सकता है।

• अभिक्रमित अनुदेशन का मूल सिद्धान्त है कि पाठ्यवस्तु को छोटे-छोटे पदों में प्रस्तुत करने से छात्र सरलता से बोधगम्य कर लेते है, तथा अधिक समय तक स्मरण भी रख लेते है।

निष्कर्ष :-

"उपरोक्त विवेचनाओ के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत में विधालय शिक्षा प्रणाली संरचना में पूर्व-प्राथमिक [L.K.G LOWER KINDERGARTEN यानि निचला बाल विहार . U.K.G [upper kindergarten यानि उपरी बाल विहार], निम्न प्राथमिक [I-V], उच्च प्राथमिक [VI-VIII] तक के बच्चो को वाचन सम्बन्धी कठीनाईयों, क्रमबद्धता और अपेक्षित गुण को एवं इसके साथ-साथ वाचन की कुछ शिक्षण विधियाँ को को शामिल किया गया है। जिससे बच्चो को शब्द, ध्वनियों, उनके उच्चारण का उचित ज्ञान कराना जिससे वाचन में शब्दों का उच्चारण शुद्ध रूप से कर सके।"

=